प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के

स्कूलों में समर्थ वातावरण

एच. के. शुभा

लाखों अकुशल एवं अर्ध–कुशल मजदूरों ने अपनी अत्यधिक गरीबी से बचने के लिए और बड़े शहरों में नौकरी खोजने के लिए अपने पैतृक गाँवों को छोड़ दिया है। ये प्रवासी मजदूर काम के सिलसिले में अपने परिवार के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहते हैं। निर्माण परियोजना के पूरा होने की अवधि तक ये लोग छोटे से शेड या झोपड़े में रहते हैं, जो कभी–कभी निर्माण कम्पनी उन्हें रहने के लिए देती है। अधिकतर निर्माण कम्पनियाँ उन्हें बिजली या शौचालय की सुविधा नहीं प्रदान करतीं। काम खत्म होने पर वे दूसरी जगह चले जाते हैं।

ऐसे परिवारों के अधिकांश बच्चे स्कूल नहीं जाते क्योंकि उनके परिवार का काम ही प्रवासी प्रकृति का होता है और पास के अच्छे स्कूल तक उनकी पहुँच भी नहीं होती। इसके साथ ही इन बच्चों को अपने छोटे भाई–बहनों की देखभाल व घर की जिम्मेदारियाँ भी उठानी पड़ती हैं क्योंकि उनके माता–पिता को काम करने के लिए बाहर जाना पड़ता है। परिणाम स्वरूप ये बच्चे अपने छोटे भाई–बहनों की देखभाल व घर की जिम्मेदारियाँ उठाने लगते हैं और अपने इसी ज्ञान के कारण वे छोटे वयस्क बन जाते हैं। जाहिर है कि ऐसी आबादी में बच्चों की शिक्षा अन्तिम प्राथमिकता बन जाती है क्योंकि उनके लिए दैनिक रोटी कमाना हर रोज का संघर्ष है; साथ ही अधिकतर बच्चे प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं।

इन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए एवं पाठ्यक्रम व अन्य समर्थकारी तत्वों की समझ विकसित करने के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन ने इनके लिए स्कूल खोलने का निर्णय लिया। दो बिल्डरों की साझेदारी के साथ 2007 में हमने बेंगलूरु में प्रवासी निर्माण कर्मियों के बच्चों के लिए दो स्कूल शुरू किए। स्कूल की स्थापना से लेकर उन्हें सुचारु रूप से चलाने, सुविधाएँ प्रदान करने, शिक्षकों को प्रशिक्षण देने, पाठ्यक्रम को पूरी तरह से जाँचकर उसे सुधारने आदि की अपनी अब तक की यात्रा में हमें बच्चों की जरूरतों को समझने में मदद मिली है और हम अभी भी इसके बारे में सीख रहे हैं।

सबसे पहले तो हमें इस बात का एहसास हुआ कि अगर हम केवल छह से बारह वर्ष के बच्चों को अपने स्कूल में लें तो कक्षा में एक भी बच्चा नहीं आएगा क्योंकि अधिकांश बच्चों पर या तो अपने छोटे भाई–बहनों के देखभाल की जिम्मेदारी होती है या फिर पड़ोस की अन्य शिशुओं की देखभाल की–जिसके लिए उन्हें हर महीने कम से कम चार सौ से पाँच सौ रुपए मिलते हैं। तो हमने निर्णय लिया किया कि हम शिशुओं व छोटे बच्चों के लिए क्रेच और पूर्व स्कूली सुविधाएँ प्रदान करेंगे। हमने यह निर्णय भी लिया कि हम ये स्कूल कैम्प में ही या कैम्प के आसपास ही खोलेंगे ताकि बच्चे सुरक्षित महसूस करें और अपने झोपड़े और सामान पर नजर भी रख सकें। इन बच्चों द्वारा आगे की पढ़ाई जारी न रख पाने के यही मुख्य कारण थे। इस व्यवस्था से बच्चों को अपनी पढ़ाई जारी रखने की स्वतन्त्रता मिल जाती है और माता–पिता को भी लगता है कि उनके बच्चे व उनका सामान सुरक्षित है।

बच्चों को स्कूल में नामांकित करने के बाद हमने महसूस किया कि अधिकांश बच्चे कुपोषण का शिकार थे। अतः हमने यह निर्णय लिया कि उन्हें तीन वक्त भोजन दिया जाए। इसके मेन्यू को पोषण विशेषज्ञ की सलाह के आधार पर नियत किया गया। बच्चों को स्कूल में सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन और शाम का नाश्ता मिलता है। बच्चों के स्वास्थ्य की नियमित जाँच (दाँत, पूरा शरीर व आँख) की जाती है और आवश्यक अनुवर्ती उपचार भी उपलब्ध कराया जाता है। इसके अलावा हर महीने बच्चों की



ऊँचाई और वजन को जाँचकर उसे दर्ज किया जाता है और यह पता किया जाता कि पोषण व स्वास्थ्य सम्बन्धी इन सुविधाओं का उनके स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। इस पहल से बच्चों के स्वास्थ्य में निश्चित रूप से सुधार आया है। चिकित्सा सम्बन्धी देख–रेख के अलावा हमने बच्चों में स्वच्छता एवं स्वस्थ आदतों के बारे में जागरूकता पैदा करने की भी कोशिश की है। यही नहीं, यहाँ बच्चे कई और कौशल भी सीखते हैं जैसे कि साझा करना, जिम्मेदारी लेना, भोजन परोसना, साथ में खाना, अपनी थाली धोना, जगह को साफ करना, टीम में काम करना आदि.....!



साझा करने का सुख

हमें मालूम था कि राज्य द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम इन बच्चों के लिए ठीक नहीं रहेगा। इसके दो कारण थे; पहला तो यह कि इन बच्चों के स्कूल में रहने की अवधि अनिश्चित और बहुत कम होती है, इसलिए हमारे पास इतना समय नहीं होता कि हम कई सालों तक आराम से बच्चों को अपेक्षित शैक्षिक कौशल सिखा सकें; दूसरे ये बच्चे भारत के विभिन्न भागों से आते हैं और उनकी भाषा, संस्कृति और सीखने का स्तर भिन्न होता है।

फाउण्डेशन ने एक पाठ्यक्रम और प्रासंगिक शिक्षण शास्त्र विकसित करने का निर्णय लिया जो बच्चों के इस विषम समूह के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। अतः यह भी जरूरी हो गया कि एक ऐसे पैकेज को विकसित किया जाए जिससे बच्चों की बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और बहुसामाजिक जरूरतें पूरी हो सकें। इसके लिए हमने मॉड्यूल आधारित तरीके को अपनाया। हर मॉड्यूल में बुनियादी दक्षताओं और कौशलों को शामिल किया गया है ताकि अगर बच्चों



को बीच में यह स्कूल छोड़कर जाना पड़े तो उन्हें मुख्य धारा के स्कूलों में प्रवेश लेने में सुविधा हो सके। बच्चों के विभिन्न अधिगम स्तरों को ध्यान में रखते हुए एक समय में दो या तीन मॉड्यूलों को करवाया जाता है। इन मॉड्यूलों को करवाते समय पूरे समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि बच्चों को स्वतन्त्र शिक्षार्थी बनाया जाए।

बाल स्नेही कक्षाएँ

स्कूल में प्रवेश करते समय विभिन्न विषयों में बच्चों के सीखने के स्तर को समझने और उनके स्वास्थ्य के बारे में जानने के लिए हमने एक प्रवेश आकलन फॉर्म को डिजाइन किया है। इसके आधार पर उन्हें विभिन्न मॉड्यूलों के तहत रखा जाता है। जो बच्चे और माता–पिता कैम्प से स्थानान्तरित होना चाहते हैं उन्हें एक "एक्जिट या निर्गम प्रमाणपत्र" दिया जाता है जिसमें बच्चे के स्कूल में रहने एवं वर्तमान अधिगम स्तर आदि के विवरण दिए होते हैं। इस प्रमाण पत्र के आधार पर बच्चे को दूसरे स्कूलों में प्रवेश मिलता है।

जब बच्चे स्कूल में प्रवेश करते हैं तो पहले कुछ दिनों तक वे अपने छोटे भाई–बहनों को कमर में लटकाए पूरे स्कूल में घूमते–फिरते हैं। वे अपनी मर्जी के मुताबिक अन्दर–बाहर आते–जाते रहते हैं। उन्हें अपने को स्कूल के अनुकूल ढालने और अपने भाई–बहनों व समूह से अलग होने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है।

हमारे नन्हें वयस्क

चूँकि इन स्कूलों में बच्चों के रहने की अवधि अनिश्चित और कम होती है, इसलिए इन्हें साल भर खुला रखा जाता है। इन स्कूलों के शिक्षकों और बच्चों को औपचारिक रूप से सालाना छुट्टी नहीं मिलती। लेकिन कटाई के मौसम में



ये बच्चे महीने–दो–महीने के लिए अपने माता–पिता के साथ अपने गाँव जरूर जाते हैं। शुरू में तो हमें माता–पिता एवं बच्चों को यह समझाने के लिए संघर्ष करना पड़ता था कि वे स्कूल से छुट्टी न लें लेकिन अब बच्चे शिक्षकों से इस बात के लिए लड़ते हैं कि वे शिक्षक विकास कार्यक्रमों के लिए और सप्ताहान्त में स्कूल बन्द न करें।

बच्चों के लिए छोटी–छोटी बातें भी बहुत मायने रखती हैं। स्कूल में बच्चों को आदमकद आईना, कंघी, बालों के लिए तेल, टैल्कम पाउडर और पेट्रोलियम जैली दी जाती है। हर रोज आईने के सामने खड़े होकर अपने और अपने भाई–बहनों को सजाना–सँवारना उनके लिए बहुत ही सुखद अनुष्ठान है–इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके अलावा सुरक्षित पेय जल, सामान्य पानी, बिजली, बालक और बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय जैसी कुछ बुनियादी सुविधाएँ भी हम बच्चों को देते हैं और अब इनका उपयोग करना उनकी आदत बन चुकी है।

कक्षा में हम ऐसे फर्नीचर का उपयोग करते हैं जिन्हें आसानी से उठाकर इधर–उधर रखा जा सके। इससे हम कक्षा में उपलब्ध स्थान का उपयोग अपनी आवश्यकतानुसार कर सकते हैं। स्कूल की टीम और बच्चे दोनों ही स्कूल के भौतिक वातावरण का सम्मान करते हैं और उसकी देखभाल करते हैं जिसके लिए वे स्कूल को साफ और व्यवस्थित रखते हैं एवं उसके रख–रखाव पर ध्यान देते हैं।

कक्षा में बच्चे ही नियम बनाते हैं और एक–दूसरे को उसकी याद दिलाते रहते हैं। स्कूल में सुरक्षा को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। हमने कोशिश की है कि स्कूल का भौतिक वातावरण सुरक्षित, मित्रवत और सरल हो। इससे बच्चे को लगेगा कि स्कूल उसके घर का ही एक हिस्सा है। इसके साथ ही हमने स्कूल में समुदाय के ही सहायक को लिया है और ज्यादातर शिक्षक भी उनके ही मूल स्थानों के हैं।

जो बच्चे पाँच मॉड्यूल और संक्रमण मॉड्यूल (जो मुख्य धारा के नियमित स्कूल में बच्चे के अनुकूलन को सुगम बनाता है) को पूरा कर लेते हैं, उन्हें मुख्य धारा के स्कूल में स्थान पाने का पूरा अवसर दिया जाता है और उनके माता–पिता को भी इस बात के लिए प्रोत्साहन और समर्थन दिया जाता है। टीम भी नियमित रूप से इन स्कूलों में जाती है और शिक्षकों से बच्चों के बारे में बातचीत करके उनकी प्रगति का पता लगाती रहती है।

यहाँ दिलचस्प बात यह है कि जो बच्चे नियमित स्कूल में जा रहे हैं वे भी इस प्रवासी स्कूल में रोज आते हैं, अपने दिन भर के अनुभव साझा करते हैं, शाम का नाश्ता करते हैं, अपना गृहकार्य पूरा करते हैं और उसके बाद ही अपने घर जाते हैं। जो बच्चे हमारे स्कूल को छोड़कर जाते हैं, उनकी प्रगति की जाँच भी त्रैमासिक रूप से की जाती है।

स्कूल के कार्यक्रमों में माता–पिता की भागीदारी

अपनी इस यात्रा की शुरुआत में ही हम समझ गए थे कि अगर हम चाहते हैं कि बच्चे स्कूल में आना जारी रखें तो इसके लिए माता–पिता के समर्थन और विश्वास की आवश्यकता है। इसलिए हम माता–पिता के साथ तालमेल बिठाने और उनके साथ अविरत विश्वास का रिश्ता कायम करने की दिशा में प्रयत्नशील रहते हैं। हम यह सुनिश्चित करते हैं एक शिक्षक कैम्प में जाए, बच्चे के परिवार को जाने, बच्चे के बारे में माता–पिता की बातों को सुने, बच्चे के अधिगम की प्रगति को उनके साथ साझा करे और बातचीत के माध्यम से उन्हें इस बात के लिए राजी करे कि वे अपने बच्चों की शिक्षा को जारी रखें। माता–पिता को नियमित रूप से स्कूल आकर बच्चों के साथ अपनी प्रतिभा साझा करने का निमन्त्रण भी दिया जाता जैसे कहानी सुनाना, पेंटिंग, बढ़ईगीरी और राजगीरी आदि।

इन स्कूलों को चलाने के लिए आवश्यक टीम का निर्माण करने के लिए सही लोगों को पहचानने में हमें एक लम्बा समय लगा। हमें ऐसे लोगों की तलाश थी जिनमें असीम ऊर्जा, बच्चे के साथ घुल–मिल जाने की क्षमता, नवाचार करने की इच्छा/क्षमता और पेशेवर शिक्षण की डिग्री हो। अब हमारे पास समर्पित युवा ऊर्जावान शिक्षकों की ऐसी टीम है जो स्कूल या बच्चों को लेकर किए गए किसी भी प्रयत्न को हाथ में लेने से हिचकिचाते नहीं। स्कूल में





वयस्कों और बच्चों के बीच पारस्परिक परवाह और सम्मान पर आधारित रिश्ते की वजह से हमारे काम में बहुत बड़ा अन्तर आया है। यहाँ बच्चे और बड़े दोनों ही स्कूल में धर्म, संस्कृति एवं लिंग अभिमुखीकरण की भिन्नता की सराहना करना सीखते हैं। स्कूल की टीम बच्चों को न केवल शैक्षिक दृष्टि से सशक्त बनाती है वरन भावनात्मक, शारीरिक एवं नैतिक रूप से पूरी तरह से विकसित होने में भी उनकी सहायता करती है।

प्रसन्न शिक्षक और प्रसन्न बच्चे

यह माता–पिता, प्रेरित एवं समर्पित शिक्षकों तथा बिल्डर की इच्छा का ही संयुक्त प्रयास है जो स्कूलों को जीवन्त रखे हुए है।

एच.के.शुभा 2007 से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ काम कर रही हैं। वे "प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के लिए शिक्षा" कार्यक्रम की शुरुआत से ही उसके साथ जुड़ी हुई हैं। सम्प्रति वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, यादगीर के प्रधानाचार्य की सलाहकार हैं और बेंगलूरु के दोनों प्रवासी मजदूर स्कूलों की एंकरिंग भी कर रही हैं। उनसे shubha@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल

